REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

भारतीय उच्च शिक्षा में प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली की समीक्षा

मो. फैसल ईसा
जूनियर रिसर्च फैलो , शिक्षाशास्त्र–विभाग , इलाहाबाद विश्वविद्यालय.

शोध–सारांश

"उच्च शिक्षा वह है जो हमें केवल ज्ञान ही नहीं देती बल्कि हमारे जीवन में अस्तित्व के साथ समरसता लाती है–**रवीन्द्र नाथ टैगोर**।" भारत में शिक्षा तीन स्तरों में विभाजित है–प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च। शिक्षा के इन स्तरों का विभाजन आधुनिक काल की देन है। विद्यार्थियों की शिक्षा की उपलब्धियों को डिवीजन, ग्रेड एवं अंकों में दर्शायी जाती है। वर्तमान समय में ज्यादातर महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में वार्षिक परीक्षा एवं कुछ जगहों सेमेंस्टर परीक्षा प्रणाली का प्रचलन है। यह प्रणाली विद्यार्थियों को रटने पर मजबूर करती है। मूल्यांकन करने में न तो अब निष्ठा है और न ही ईमानदारी है। परीक्षाओं में धांधली हो रहीं है, प्रश्न पत्र आउट हो रहे हैं। परीक्षाओं में नकल कराने के लिए नकल माफिया सक्रिय योगदान देते हैं, जिनका सम्बन्ध उच्च वर्ग के व्यक्तियों से होता है।

कुंजी शब्द:परीक्षा, मूल्यांकन, विद्यार्थी।

प्रस्तावना :

कुरानशरीफ का पहला कथन है– इकरा पढ़ो। अल्लाहताला का फ़रमान है कि तालीम हासिल करो, इल्म (ज्ञान) विकसित करो "उतलिवुल इल्म वलौ काना बिस्सीन" अर्थात इल्म के लिए चीन (यानी बहुत दूर) ही क्यों न जाना पड़े तो जाना चाहिए। परिस्थितियों को समझने–बूझने, उनका विश्लेषण करने और उनसे निजात पाने की कला का नाम है शिक्षा। शिक्षा वह संजीवनी है जो अज्ञानतारूपी मरूस्थल में भी ज्ञान की गंगाा लहराती है। भारतीय मनीषियों ने कहा है– सा विद्या या शास्ति अर्थात्, जो हमें अनुशासित करती है वह विद्याा है। पुनः वे कहते हैं– सा विद्या या विमक्तये, मतलब वही विद्याा जो हमें मुक्ति देती है। गुरूग्रन्थसाहिब में भी वर्णित है– विद्या विचारी तां परोपकारी।

15 साल पहले मैनेजमेंट गुरू पीटर ड्रकर ने एलान किया था, "आन वाले दिनों में ज्ञान का समाज दुनिया के किसी भी समाज से ज्यादा प्रतिस्पर्धात्मक समाज बन जाएगा। दुनिया में गरीब देश शायद समाप्त हो जाऐं लेकिन किसी देश की समृद्धि का स्तर इस बात से आंका जाएगा कि वहाँ की शिक्षा का स्तर किस तरह का है।"

बदलती व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में हमारी नैतिकतापूर्ण, गुणवत्तापूर्ण व व्यक्तित्व निर्माण केन्द्रित शिक्षा पद्धिति कहाँ तक अपने अस्तित्व को बनाये रखने में समर्थ है, यह एक विचारणीय प्रश्न है। बिना किसी संदेह के हम मैकाले की शिक्षा पद्धति को कोसने से बाज नहीं आते, पर आज तक मैकाले की आत्मा हमारा पीछा नहीं छोड़ रही है, जिसके लिए मैकाले कहीं से जिम्मेदार नहीं है। वैश्वीकरण के युग में हम अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं। संख्या की दृष्टि से देखा जाए तो भारत की उच्चतर शिक्षा व्यवस्था अमेरिका और चीन के बाद तीसरे नम्बर पर आती है।

भारत में उच्च शिक्षा का ढाँचा आज भी वैसे ही जो परतंत्र भारत में प्रचलित था। उस समय इस ढाँचे का लक्ष्य सुसंस्कृत व्यक्ति तैयार करना था। यदि यह कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि उस समय हम पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित थे और हमारे विश्वविद्यालय उसी तरह के शिक्षित वर्ग तैयरा करने में संलग्ल थे, जैसे ऑक्सफोर्ड या कैम्बिज में निर्मित हो रहे थे, किन्तु भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात उच्च शिक्षा का लक्ष्य केवल सुसंस्कृत नागरिक ही उत्पन्न करना नहीं रह सकता। क्योंकि लोकतंत्र की अपनी आवश्यकताऐं होती हैं और भारत तो बहुलतावादी देश है जहां हमें अपनी विशाल जनसंख्या की आश्यकताओं के अनरूप ही उच्च शिक्षा की पुर्नरचना करनी होगी।

भारत के अधिकांश विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में शिक्षण का ढाँचा अभी तक परंपरागत ही बना हुआ है। शिक्षक कक्षा में जाकर 45–50 मिनट लेक्चर देता है। लेक्चर देकर उसका कर्तव्य पूरा हो जाता है। समूह कक्षाएं या ट्यूटोरियल्स पर ध्यान बहुत कम केन्द्रित किया जाता है। हर विद्यार्थी में कुछ न कुछ तो वैयक्तिक विशेषता होती है, पर उसका विकास नहीं हो पाता है। क्योंकि उसका सारा ध्यान सिर्फ परीक्षा को पास करने में होता है। परीक्षा पास करने को ही वह शिक्षा प्राप्त करने का लक्ष्य समझता है।

भारत में प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली :

छात्रों के द्वारा की जाने वाली शैक्षिक प्रगति का मापन एवं मूल्यांकन करना एक अत्यंत आवश्यक कार्य है। अध्यापकों के लिए यह जानना अत्यंत उपयोगी है कि उनके शिक्षण से छात्र किस सीमा तक लाभ उठा रहे हैं, अभिभावकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे अपने आश्रितों की शैक्षिक प्रगति को समय–समय पर जानकर तद्नुसार उनको सही दिशा निर्देश दे सकें, छात्रों को स्वयं की शैक्षिक उपलब्धि का ज्ञान होना इसलिए आवश्यक है कि वे आवश्यकतानुसार अपनी अधिगम शैली तथा आदतों को परिवर्तित कर सकें तथा नियोजनकर्ताओं को शैक्षिक प्रगति का ज्ञान होना इसलिए आवश्यक है जिससे वे उपयुक्त शैक्षिक योजनायें तैयार कर सकें। निःसंदेह छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन एवं मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में ज्यादातर महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में वार्षिक परीक्षा एवं कुछ जगहों सेमेंस्टर परीक्षा प्रणाली का प्रचलन है।यह प्रणाली विद्यार्थियों को रटने पर मजबूर करती है।भारत में प्रचलित कुछ मूल्यांकन प्रणालियाँ है, जिनकी विशेषताओं और कमियों का वर्णन निम्न है–

• निबान्धात्मक परीक्षण :–

निबान्धात्मक परीक्षण की विशेषतायें–

1–परीक्षण के निर्माण में सरलता।
2–कम खर्चे वाली।
3–विद्यार्थियों को अपने विचार को व्यक्त करने की स्वतंत्रता।
4–लिखने की कला की मूल्यांकन।
5–विस्तृत अध्ययन को प्रोत्साहित करना।

निबान्धात्मक परीक्षण के दोष–

1–विद्यार्थियों को रटने पर मजबूर करना।
2–व्यक्तिनिष्ठता पर बल।
3–कम विश्वसनीय एवं कम वैध।
4–इस परीक्षण का कोई निश्चित उद्देश्य नहीं होता।
5–सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के प्रतिनिधत्व की कमी।

• वस्तुनिष्ठ परीक्षण –

वस्तुनिष्ठ परीक्षण की विशेषतायें–

1–लिखने की कला पर बल प्रदान नहीं करता।
2–अधिक विश्वसनीय एवं अधिक वैध।

3–सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का प्रतिनिधत्व करना।
4–विद्यार्थियों को रटने पर मजबूर नहीं करना।
5–यह परीक्षण शिक्षण उद्देश्यों पर निर्धारित होता है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण के दोष –

1–परीक्षण के निर्माण में कठिनता।
2–तुक्का लगाने को प्रोत्साहित करना।
3–विद्यार्थियों को अपने विचार को व्यक्त करने की स्वतंत्रता प्रदान नहीं करता।
4–नकल करने की अत्यधिक सम्भावना।
5–अधिक खर्चे वाली

• **ग्रेडिंग परीक्षण**–अमेरिका आदि विकसित देशों में तो काफी समय से ग्रेड प्रणाली का प्रयोग किया जा रहा है। भारत में भी कुछ प्रगतिशील शिक्षा संस्थाओं, माध्यमिक शिक्षा परिषदों, विश्वविद्यालयों तथा तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा संस्थाओं ने ग्रेड प्रणाली उपयोग प्रारम्भ कर दिया है।

ग्रेड प्रणाली में परीक्षक छात्रों के उत्तरों को सीधे ग्रेड देकर मूल्यांकित करते हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर को परीक्षक अलग–अलग ग्रेड प्रदान करते हैं तथा सम्पूर्ण उत्तर पुस्तिका के लिए ग्रेड औसत ज्ञात करते हैं। ग्रेड औसत ज्ञात करने के लिए पहले सभी ग्रेड को अंकों में बदला जायेगा, तब उनका औसत ज्ञात कर लिया जायेगा।

ग्रेडिंग परीक्षण प्रणाली की विशेषतायें –

1–विभिन्न विद्याार्थियों के परिणामों की तुलना करने की दृष्टि से मूल्यांकन की ग्रेड प्रणाली उपयोगी है।
2–ग्रेड प्रणाली का प्रयोग परीक्षा की विश्वसनीयता को बढ़ाता है।
3–ग्रेड प्रणाली विभिन्न विषयों तथा संकायों में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करने के लिए एक कॉमन पैमाने का कार्य करती है।

ग्रेडिंग परीक्षण प्रणाली के दोश–

1–विभिन्न ग्रेड का अभिप्राय उनकी सैद्धान्तिक परिभाषा पर पूर्ण निर्भर न होकर काफी सीमा तक परीक्षक के द्वारा अपनाये गये मानदण्ड पर आधारित होता है।
2–भिन्न–भिन्न परीक्षकों द्वारा प्रदान किये जाने वाले ग्रेड की तुलना भी सरल नहीं होती है।
3–परीक्षकों की आत्मनिष्ठता के कारण प्राप्तांक अथवा ग्रेड में विसंगतियां आ जाती है।

• **सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली** –सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में किसी उपाधि के लिए निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम को 6–6 माह के भागों में विभाजित कर दिया जाता है जिन्हें सेमेस्टर कहते हैं। प्रत्येक सेमेस्टर के पाठ्यक्रम का शिक्षण करने के बाद परीक्षा का आयोजन किया जाता है।

सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली की विशेषतायें –

1–इस परीक्षा प्रणाली में सत्र की अवधि कम होने के कारण छात्रों को समस्त सेमेस्टर अध्ययन करना पड़ता है।
2–लगातार अध्ययन करने के फलसवरूप विद्यार्थियों में विषयवस्तु की समझ और आत्मविश्वास बढ़ता है।
3–सेमेस्टर प्रणाली में एक सेमेस्टर के परीक्षा परिणामों की प्रतीक्षा किये बिना अगले सेमेस्टर का अध्ययन प्रारम्भ कर सकते हैं।
4–किसी सेमेस्टर में कोई छात्र यदि किसी एक विषय या एक–दो प्रश्न पत्रों में फेल हो जाता है तब वह उस विषय या प्रश्नपत्र में अगली बार अतिरिक्त ढंग से पुनः परीक्षा देकर उत्तीर्ण कर सकता है।
5–सेमेस्टर प्रणाली सम्पूर्ण वर्ष अध्यापकों तथा छात्रों को शिक्षण व अधिगम में व्यस्त रखती है।

सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली के दोष–

1–कम अन्तराल में परीक्षाओं का आयोजन करना प्रशासनिक दृष्टि से एक समस्या है।
2–विद्यार्थियों की संख्या अधिक होने पर वर्ष में दो बार परीक्षाओं का आयोजन मुश्किल कार्य है।
3–सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली अधिक खर्चीली है।
4–शिक्षण के कुछ समय पश्चात् ही परीक्षा लेने के कारण बोध के स्थान पर याद करने की प्रवृत्ति बढेगी।

- **सतत–आन्तरिक मूल्यांकन प्रणाली**–सतत–आन्तरिक मूल्यांकन प्रत्यय परीक्षा सुधार के 2 प्रमुख सिद्धान्तों पर आधारित है, 1–जो व्यक्ति अध्यापन कर रहे हैं, वही व्यक्ति मूल्यांकन भी करेंगे। 2–मूल्यांकन का कार्य सत्र के अन्त में न होकर सम्पूर्ण सत्र में लगातार होगा।

सतत–आन्तरिक मूल्यांकन प्रणाली की विशेषतायें –

1–सतत–आन्तरिक मूल्यांकन सम्पूर्ण सत्र के दौरान विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए प्रेरित करती है।
2–चयनित व निम्न स्तरीय अध्ययन की प्रवृत्ति को सतत–आन्तरिक मूल्यांकन प्रणाली समाप्त करती है।
3–विद्यार्थियों को समय–समय पर उनकी शैक्षिक प्रगति से अवगत कराकर उन्हें आवश्यक पृष्ठपोषण मिलता है।
4–सतत–आन्तरिक मूल्यांकन में मापन व मूल्यांकन की विभिन्न प्रविधियों व उपकरणों का प्रयोग किया जाता है।
5–सतत–आन्तरिक मूल्यांकन विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ अध्यापकों को भी अपनी शिक्षण योजना में आवश्यक सुधार करने के अवसर प्रदान करता है।

सतत–आन्तरिक मूल्यांकन के दोष –

1–सतत–आन्तरिक मूल्यांकन समय लेने वाली प्रणाली है।
2–सतत–आन्तरिक मूल्यांकनमें शिक्षकों के काम का बोझ बढ़ जाता है एवं यह शिक्षकों के भाग में प्रशिक्षण, दक्षता और कुशलता की मांग करता है।
3–अध्यापन के पेशे में काम करने वालों जीवन में कुछ मजबूरी के कारण काम नहीं कर सकते हैं और उनके हाथों से मानदंड नीच जा सकते हैं।

- **सी0बी0सी0एस0 प्रणाली** –इस प्रणाली में विद्यार्थियों के पास निर्धारित पाठ्यक्रमों का चयन करने का विकल्प होता है, जिसे मूल, निर्वाचित या मामूली या मृदु कौशल पाठ्यक्रम के रूप में संदर्भित किया जाता है और जिसे वह अपने हिसाब से सीख सकते हैं, यह सम्पूर्ण मूल्यांकन क्रेडिट आधारित प्रणाली पर आधारित है।

सी0बी0सी0एस0 प्रणाली की विशेषतायें –

1–सी0बी0सी0एस0 प्रणाली एक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिसमें छात्र अपने पसंदीदा पाठ्यक्रम को चुन सकते हैं।
2–क्रेडिट प्रणाली एक छात्र को उसके हितों के अनुसार अपनी खुद की पसंद के बारे में अध्ययन करने की अनुमति देता है।
3–विद्यार्थी अतिरिक्त पाठ्यक्रमों के विकल्प चुन सकते हैं और आवश्यक क्रेडिट से अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।
4–विद्यार्थीसीखने के लिए एक बहुविषयक दृष्टिकोण का विकल्प चुन सकते हैं।
5–एक संस्थान में पाठ्यक्रम के एक भाग के लिए और दूसरे संस्थान में पाठ्यक्रम के दूसरे भाग का विकल्प चुन सकते हैं। इससे अच्छे और अनुपयुक्त विश्वविद्यालय या संस्थानों के बीच एक स्पष्ट विकल्प की स्थापना करने में मदद मिलेगी।

सी0बी0सी0एस0 प्रणाली के दोष –

1–सटीक अंकों का अनुमान लगाना आसान नहीं है।
2–शिक्षकों पर काम का बोझ बढ़ता है।

3–शिक्षा के सार्वभौम प्रसार के लिए उचित और अच्छे बुनियादी ढाँचे की जरूरत।

भारत में प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली की चुनौतियाँ–

- विद्यार्थियों की शिक्षा की उपलब्धियों को डिवीजन, ग्रेड एवं अंकों में दर्शायी जाती है। उनकों पास या फेल किया जाता है। परीक्षाऐं समय से नहीं होती, रोक दी जाती है, सत्र शून्य कर दिये जाते हैं। परीक्षा में हर प्रकार की धांधली की जाती है, पर्चा बनाने से लेकर कापियों को जाँचने और अंकों में गड़बड़ी करने तक। शिक्षा की चुनौती में लिखा है– स्थिति यहां तक आ गई है कि एक विश्वविद्यालय कोई ग्रेड देता है तो दूसरा विश्वविद्यालय इस पर स्वतः विश्वास नहीं करता।
- परीक्षाओं में नकल का बोलबाला है। परीक्षाओं में नकल कराने के लिए नकल माफिया सक्रिय योगदान देते हैं, जिनका सम्बन्ध उच्च वर्ग के व्यक्तियों से होता है।
- देश में 60 से अधिक विद्यालयी बोर्ड हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे कई विश्वविद्यालय पूर्व स्नातक छात्रों का नामांकन पूर्व–स्नातक कक्षाओं (12) में ग्रेड या प्राप्तांक के आधार पर करते हैं। नामांकन की यह एक अनुचित प्रक्रिया है क्योंकि अलग–अलग बोर्ड के अंक देने के विभिन्न मानक होते हैं।
- एक सामान्यीकृत पद्धति की कमी ने विद्यालय बोर्डों के सामने अपने छात्रों के अंकों को बढ़ाने एवं गलत रिपोर्टिंग करने के लिए एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रोत्साहन देने की स्थिति पैदा कर दी है। जो बोर्ड ऐसा करने में विफल रहते हैं, उनके विद्यालय वैसे बोर्डों का रूख कर लेते हैं जहां ग्रेडिंग प्रक्रिया ज्यादा उदार है।

भारत में प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली में सुधार हेतु सुझाव –

- भारत को ब्रिटेन के ऑफिस ऑफ क्वालीफिकेशंस एण्ड एक्जामिनेशंस रेगुलेशन यानी योग्यताओं और परीक्षाओं के विनियमन की तर्ज पर परीक्षा के एक निगरानीकर्ता की जरूरत है जो विविध परीक्षा संगठनों के मूल्यांकन मानकों पर नजर रखेगा।
- ग्रेड अंक प्रणाली में यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि विभिन्न बोर्डों की ग्रेडिंग योजनाओं में निंतरता और एकरूपता हो।
- अमेरिका के स्कोलिस्टिक ऐप्टीच्यूड टेस्ट या सैट की तर्ज के साथ एक सामान्य शैक्षिक परीक्षा की रूपरेखा तैयार की जानी चाहिए जिसके परिणामों को सभी बोर्डों में छात्रों के प्रदर्शन को एक मानदण्ड के रूप में उपयोग में लाया जाना चाहिए। ऐसी शैक्षिक परीक्षा के नतीजों का उपयोग केंद्रीय विश्वविद्यालयों द्वारा छात्रों के लिए एक प्रोत्साहन के रूप में भी किया जा सकता है।
- विभिन्न बोर्डों में विद्यार्थियों की संख्या अधिक होती है इसलिए परीक्षाओं में विकल्प वाले प्रश्नों का एक अच्छा अनुपात होना चाहिए जिसे ओएमआर उत्तर पत्रकों द्वारा कम्प्यूटर से मार्क किया जा सके। इससे परीक्षकों की कमी (आत्मनिष्ठता) के कारण होने वाली निम्न गुणवत्ता से बचा जा सकेगा।
- परीक्षाओं में नकल पर लगाम लगाना पड़ेगा। नकल माफियाओं को प्रशासन द्वारा दण्डनीय सजा का प्रावधान किया जाये।
- उच्च शिक्षा व्यावहारिक हो, उपाधियों के स्थान पर योग्यताओं को स्थान देने का प्रयास हर क्षेत्र में किया जाये।

निष्कर्ष :

ज्ञान आधारित समाज के मौजूदा समय में अब केवल रटने और स्मरण से काम नहीं चलेगा, बल्कि बोध और अनुप्रयोग विद्यार्थियों को आना चाहिए। विद्यार्थियों के नामांकन के दौरान सभी महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के पास अनिवार्य रूप से विद्यालयी परीक्षाओं से आगे मूल्यांकन के एक स्तर का संचालन करने की स्वायतता होनी चाहिए। शिक्षकों से मूल्याकन के समय ज्यादा कॉपियां न जँचवाये, क्योंकि ज्यादा कापियां जाँचने से शिक्षक ऊबने लगते हैं और मूल्यांकन प्रक्रिया प्रभावित होती है। मूल्यांकन का स्वरूप अथवा प्रणाली चाहे जो हो, शिक्षकों को मूल्यांकन करने में अपनी कर्तव्य निष्ठा दिखाना पड़ेगा और सिर्फ पैसों के लिए

मूल्यांकन करने की प्रवृत्ति को त्यागना पड़ेगा। जिससे उच्च शिक्षा में उन्हीं विद्यार्थियों को प्रवेश मिले जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने के काबिल हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- अग्निहोत्री, आर0. (2007), आधुनिक भारतीय शिक्षाः समस्याएँ और समाधान, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- गुप्ता, एस0पी एवं अलका.(2016), आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्याऐं, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय. (2016), एजूकेशनल स्टेटिस्टिक्स एट ए ग्लान्सः वार्षिक रिपोर्ट 2016.http://mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/statistics/ESG2016_0.pdf retreawed from 02-02-2019.
- पाण्डेय, के, पी0. (2005), शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- सिंह, ए0, के0. (2009), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में षोध विधियाँ, दिल्लीः मोतीलाल, बनारसीदास।
- श्रीवास्तव, ए0आर0एन0.(2002), भारतीय सामाजिक समस्याये, इलाहाबादः के0के0 प्रकाशन, एकेडमी प्रेस।
- https://www.orfonline.org/hindi-post

मो. फैसल ईसा
जूनियर रिसर्च फैलो , शिक्षाशास्त्र–विभाग , इलाहाबाद विश्वविद्यालय.

LBP PUBLICATION